वाराणसी, रविवार
25 मार्च 2018
नगर संस्करण**
मूल्य ₹ 4.00
पृष्ठ 24+4+4=32

दैनिक जागरण

हसीना ने बदल डाली कई महिलाओं की तकदीर

नमो देव्यै महा देव्यै
नारी सशक्तीकरण

कालीन निर्माण का कार्य कराती हसीना बेगम • जागरण

जागरण संवाददाता, ज्ञानपुर (भदोही) : लगन के साथ मन में कुछ करने की तमन्ना हो तो मुश्किल राहें भी आसान हो जाया करती हैं। कोई भी कठिनाई राह की बाधा नहीं बन सकती है। न निरक्षरता आड़े आएगी न तो धन । अभोली ब्लाक क्षेत्र के वीरभद्रपट्टी गांव हसीना बेगम ने कुछ ऐसा ही कर दिखाया है । पहले कालीन बुनाई संग ककहरा सीखकर अपने उपर लगे अनपढ़ होने के दाग को समाप्त किया तो फिर समूह गठित कर कालीन से जुड़े कार्यों को अंजाम देना शुरू कर न सिर्फ अपनी माली हालत को बदल डाला बल्कि दर्जनों और महिलाओं को रोजगार देकर रोल माडल बन चुकी हैं।

ज्ञानपुर ब्लाक के नथईपुर गांव में सामान्य से परिवार में जन्म लेने वाली हसीना का बचपन भी पूरी तरह ऐसे माहौल में गुजरा जब बालिकाओं की शिक्षा के प्रति विशेष गंभीरता नहीं दिखाई जाती थी। लिहाजा उनका भी दाखिला विद्यालय में नहीं हुआ। वर्ष 1998 में उनकी शादी वीरभद्रपट्टी निवासी युसुफ आजाद के साथ हो गई। फिर क्या था वह पूरी तरह घर गृहस्थी में रम-बस गई। हालांकि निरक्षर होने का दर्द उन्हें अकसर कचोटता रहता था। साथ ही वह भी स्वरोजगार कर कुछ करना चाहती थी। उनकी इस उम्मीद को रोशनी की किरण उस समय दिखाई पड़ी जब वर्ष 2013 में जिले में सक्रिय हुई तारा अक्षर संस्थान ने निरक्षर महिलाओं को साक्षर करने का काम शुरू किया। उन्होंने गांव में ही शुरू हुए केंद्र में दाखिला लेकर ककहरा सीखने का काम शुरू कर दिया। इसके साथ ही मुक्त विश्वविद्यालयीय शिक्षा संस्थान से प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त की। उधर कालीन से जुड़े कार्यों का हुनर उन्हें मायके में हो रहे कालीन कार्य के चलते विरासत में मिला था। फिर क्या था उन्होंने अपनी पढ़ाई व हुनर के तालमेल कायम करते हुए समूह से जुड़कर अन्य महिलाओं को काम कर धनोपार्जन के लिए प्रेरित करना शुरू कर दिया। इसी बीच एक कालीन कंपनी से बात कर उन्होंने अपने घर में केंद्र स्थापित किया और ताला अक्षर से जुड़ी कई अन्य महिलाओं को भी कालीन से जुड़े कार्यों का प्रशिक्षण दिलाया। उनके साथ फिर केंद्र को आगे बढ़ाने का काम शुरू किया तो फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। बताया कि विभिन्न कालीन कंपनियों से कालीन लाकर उसमें डिजाइन काटकर फाइनल टच देने का कार्य कर जहां वह खुद आठ से दस हजार रुपये का आय अर्जित कर लेती हैं तो करीब 40 से अधिक और महिलाओं भी रोजगार हासिल कर रही हैं। उन्होंने कहा कि लगन के साथ यदि मेहनत की जाय तो कोई भी कार्य मुश्किल नहीं होता। प्रत्येक महिलाओं को चाहिए कि वह आत्मनिर्भर बनकर परिवार का सहयोग करें।

संकल्प

- कालीन बुनाई संग सीखा ककहरा स्वरोजगार कर बनी रोल माडल
- खुद के संग दर्जनों और महिलाओं को समूह से जोड़कर दे रही लाभ